गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४३

संस्कृत साहित्य-संग्रह

तेरह पुस्तक-समूह

अठारह कृतिक समालोचनात्मक अध्ययन

मूल मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४३

संस्कृत साहित्य-संग्रह

तेरह पुस्तक-समूहक अठारह कृतिक समालोचनात्मक अध्ययन

मूल कृति-सम्पादन आ मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

अध्ययनक आधार आ प्रमाण-सीमा

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादित ‘संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण’क भीतर तेरह पुस्तक-समूह अछि। भल्लट–क्षेमेन्द्र–नीलकण्ठक पुस्तक-समूहमे तीन स्वतंत्र कृति आ चतुर्भाणीमे चारि भाण समाविष्ट अछि; एहि कारणेँ समग्र अध्ययनक वास्तविक कृति-संख्या अठारह अछि। एहि समीक्षा-पुस्तकमे संयुक्त संस्करणक मैथिली पाठ प्राथमिक स्रोत अछि। उपलब्ध अंग्रेजी विभागकेँ तुलनात्मक पाठक रूपमे देखल गेल अछि। संस्कृत मूलक स्वतंत्र आलोचित प्रति एहि अध्ययनमे प्रत्यक्ष आधार-पाठक रूपमे उपलब्ध नहि रहने, शाब्दिक संस्कृत–मैथिली निष्ठाक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

अध्ययनक मूल कसौटी ग्रन्थक प्रमाणित शीर्षक, कृतिकारक स्पष्ट श्रेय, कथात्मक वा नाटकीय गठन, पात्र-व्यवहार, काव्यशास्त्रीय उपकरण, सामाजिक मूल्य, भाषिक रूपान्तरण आ साहित्यिक सीमा अछि। नाटक लेल अङ्क-विभाजन आ मंचीय निर्देशन; गद्यकाव्य लेल वर्णनाक दीर्घता आ कथास्तर; अन्योक्ति-व्यंग्य लेल बिम्ब आ संकेत; भाण लेल एकल-अभिनेताक अदृश्य संवाद; अनुवाद लेल सम्बोधन, श्लेष, शब्दार्थ आ सांस्कृतिक प्रसंगक परीक्षण प्रमुख अछि।

जयन्त भट्टक आगमडम्बरम् आ उदयनाचार्यक न्यायग्रन्थ एकहि शास्त्रीय भूगोलमे रहितहुँ समान विधा नहि। एहि खण्डमे जयन्तक नाटकीय प्रतिपादनकेँ दार्शनिक शास्त्रार्थक यथातथ्य प्रतिलिपि मानि नहि पढ़ल गेल। दामक प्रहसनम्क सम्भावित रचनाकारक विषयमे मूल प्रकाशकीय अनिश्चितता सुरक्षित राखल गेल अछि। अंग्रेजी पाठसभक स्रोत-उल्लेख एक सन नहि; तेँ हुनका सभकेँ स्वतः संस्कृतसँ सीधा अंग्रेजी अनुवाद नहि कहल गेल।

अनुक्रमणिका

01 अभिज्ञानशाकुन्तलम् : प्रेम, विस्मृति आ राजकीय उत्तरदायित्व.....4

02 आगमडम्बरम् : सम्प्रदाय, तर्क आ धार्मिक संस्थाक सत्ता.....6

03 भगवदज्जुकम् : देह–आत्माक विपर्यय आ प्रहसनक दर्शन.....8

04 भल्लट-शतक, कलाविलास आ कलियुग-विडम्बना : व्यंग्यक तीन शिल्प. 10

05 चतुर्भाणी : एकपात्रीय नाटकक चारि संसार.....12

06 दामक प्रहसनम् : रचनाकारक अनिश्चितता आ नाटकीय व्यंग्य.....14

07 हास्यार्णवप्रहसनम् : नामकरण, व्यवस्था आ व्यंग्यक महासागर.....16

08 कादम्बरी : कथाभीतर कथा, वर्णनाक विस्तार आ कालक आवर्तन.....18

09 मृच्छकटिकम् : नगर, प्रेम, न्याय आ जनसत्ता.....20

10 मत्तविलास प्रहसनम् : सम्प्रदायगत उपहास आ भिक्षापात्रक खोज.....22

11 मुद्राराक्षसम् : मुद्रिका, गुप्तचर आ राजसत्ताक नैतिक गणित.....24

12 पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् : भोजन, जातिगत पद आ संस्कारक हास्य.....26

13 उत्तररामचरितम् : करुणा, राजधर्म आ स्मृतिक पुनर्निर्माण.....28

अन्तरकृतिगत तुलनात्मक अनुशीलन.....30

समग्र मूल्याङ्कन.....31

ग्रन्थाधार.....32

01 अभिज्ञानशाकुन्तलम् : प्रेम, विस्मृति आ राजकीय उत्तरदायित्व

मूल रचनाकार : महाकवि कालिदास

संयुक्त संस्करणमे एहि नाटकक मैथिली विभागमे प्रस्तावना, पात्र-परिचय आ सात अङ्क निर्धारित अछि। मृगयासँ आरम्भ भऽ रहस्य, प्रेम-दाह, विदाई, दुर्घटना, विरह आ शापमुक्ति धरि नाम देल क्रम नाट्यविकासक एकटा स्पष्ट मानचित्र उपलब्ध करबैत अछि। मृगयाक दृश्य केवल राजा दुष्यन्तक शौर्यक प्रदर्शन नहि; आश्रमक मृगपर बाण चलयबाक इच्छा आ तपस्वीक प्रतिरोधसँ राजकीय शक्तिक सीमा शुरूहिमे उद्घाटित होइत अछि। तपस्वीक कथनमे शस्त्रक प्रयोजन दुःखितक रक्षा थिक, निर्दोषपर प्रहार नहि। ई वाक्यक नैतिक अपेक्षा पछिला अङ्कसभमे राजाक व्यवहारकेँ परखबाक कसौटी बनि जाइत अछि।

शकुन्तलाक आश्रम-जीवनक परिचय गाछ-पातकेँ पानि देबाक क्रियासँ होइत अछि। नाटकक वन केवल शृंगारक पृष्ठभूमि नहि, बरु परस्पर निर्भरताक सामाजिक क्षेत्र अछि। शकुन्तलाक अपन इच्छासँ वृक्षक सेवा करब दुष्यन्तक राजमहलक स्वामित्वबोधक प्रतिपक्ष ठाढ़ करैत अछि। एही भेदमे स्त्री-पात्रक कर्तृत्वक संकेत भेटैत अछि, मुदा राजाक दृष्टि आरम्भमे हुनका सौन्दर्यक वस्तु बना कऽ देखैत अछि। अनुवादमे दृश्य-निर्देश आ संवाद अलग-अलग चिन्हित रहबाक कारण पाठक ई दृष्टिक अन्तर पकड़ि सकैत छथि।

प्रेम-दाहसँ विदाई धरि नाटकक गति द्रुत होइत अछि, जखन कि राजदरबारक विस्मृति कथात्मक समयकेँ ठमका दैत अछि। अभिज्ञानक वस्तु, स्मृतिहीनता आ सामाजिक मान्यता परस्पर गुँथल अछि: स्मृति निजी चेतनाक वस्तु होइतो स्त्रीक वैध पहिचान राजकीय स्वीकृतिपर निर्भर भऽ जाइत अछि। एकर समीक्षामे केवल ‘शाप’केँ कारण मानब पर्याप्त नहि। पाठकेँ ई सेहो पूछबाक चाही जे पुरुषक विस्मृतिक दुष्परिणाम स्त्रीकेँ किएक सहन करऽ पड़ैत अछि। करुणासँ निर्मित ई प्रश्न नाटकक रसकेँ राजनीतिक आयाम दैत अछि।

अन्तिम अङ्कमे पुनर्मिलनक संग पुत्रक पहिचान राजवंशक निरन्तरताकेँ स्थिर करैत अछि। मुदा मिलनक सुख पहिल वियोगक चोट मेटा दैत अछि—एहन

सरल निष्कर्ष उचित नहि। शकुन्तलाक अनुभव, आश्रमक स्वतंत्रता आ दरबारक विधानक बीच रहि गेल तनाव कलात्मक रूपसँ अर्थवान अछि। नाटकक शृंगाररस विप्रलम्भक लम्बा अवकाश बिना समग्र होएबे नहि करैत।

मैथिली विभागक बाद अंग्रेजी रंगमंचीय पाठ ‘The Recognition of Shakuntala’ देल गेल अछि। दुनू पाठक प्रस्तावना, मृगया, राजकीय आदेश, वनक वनस्पति आ अभिनयसूचक निर्देशनक नमूनाक तुलनासँ बुझल जा सकैत अछि जे मैथिलीक सम्मानसूचक सम्बोधन अंग्रेजीमे कतेक परिवर्तित होइत अछि। संस्कृतक स्वतंत्र आलोचित मूल प्रति एहि संकलनमे एकल आधारपाठक रूपमे देल नहि गेल अछि; तँ अनुवाद-निष्ठाक अन्तिम निर्णय अलग मूल-संस्करणक मिलानक बादे उचित होयत।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 1; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

02 आगमडम्बरम् : सम्प्रदाय, तर्क आ धार्मिक संस्थाक सत्ता

मूल रचनाकार : जयन्त भट्ट

मूल पुस्तकक प्रारम्भमे नट-जीविकाक विडम्बना आ वैराग्यक इच्छा सामने अबैत अछि। सूत्रधार अभिनयकेँ छल-कपटसँ जुड़ल व्यवसाय मानि त्यागब चाहैत अछि, मुदा ओकर सहचर नाट्यक सामाजिक उपयोग आ जीविकाक आवश्यकता सोझाँ रखैत अछि। एहि प्रस्तावनामे अभिनयक सत्य-असत्यक विवाद एहन पूर्वभूमि बनैत अछि जाहिसँ आगाँ धार्मिक सिद्धान्तक दावासभकेँ देखल जाइत अछि। लेखक जयन्त भट्टक नैयायिक परिचयकेँ ध्यानमे राखि ई प्रश्न आवश्यक अछि जे नाटक तर्कक खुलल मंच बनबैत अछि अथवा पहिले सँ निर्धारित निष्कर्षक पक्षमे वाद-संवाद सजबैत अछि।

पहिल अङ्कक पूर्वभूमिमे बौद्ध भिक्षु आ शिष्यक संवादमे दुःख, समुदय, निरोध आ मार्गक विवेचना अछि। स्थायी आत्माक निषेध, कर्मफल आ स्मृतिक प्रश्न क्रमशः उठैत अछि। अनुवादक महत्त्व एतय ई अछि जे कठिन दार्शनिक विषय पात्रक प्रतिप्रश्नमे आबि सामान्य पाठक लेल सजीव होइत अछि। तथापि ‘शुद्ध चैतन्य’ सन पदक प्रयोगकेँ विभिन्न बौद्ध परम्पराक भीतर भिन्न मतसभसँ पृथक् परखबाक आवश्यकता अछि; कोनो एक पात्रक कथनकेँ समूचा बौद्ध दर्शनक अन्तिम मत नहि मानल जाय।

नाटक चारि अङ्कमे विभाजित अछि। बौद्ध, जैन, वैदिक आ अन्य साधनापरम्पराक प्रवक्ता मंचपर प्रवेश करैत छथि। प्रतिपक्षक पक्ष जबहिं तर्क-रूपमे उपस्थित होइत अछि, तखने ओकर वास्तविक आलोचना सम्भव होइत अछि; जे पात्र केवल हँसी उत्पन्न करबाक उपकरण बनैत अछि ओकरा दार्शनिक प्रतिनिधि मानब अनुचित होयत। ई भेद एहि नाटकक समालोचनाक केन्द्रमे रहबाक चाही। वैचारिक वादक कला नाटकीय संघर्षमे व्यक्त भेल अछि, मुदा पक्ष-विपक्षक स्थान समान नहि होएब नाटकक अन्तःसीमा थिक।

अन्तिम अङ्कक निर्णयमे धार्मिक परम्पराकेँ परस्पर नहि मिलयबाक निर्देश आ राजकीय अधिकारीक नियामक भूमिका प्रमुख होइत अछि। एतय सहिष्णुता आ पृथक्करण एकहि राजनीतिक ढाँचामे उपस्थित अछि। समन्वयक प्रशंसा करबासँ पहिने पूछब आवश्यक अछि जे ‘प्रत्येक मत अपन क्षेत्रमे’क नियमक रक्षा के

करत, सीमा के तय करत, आ अलग परम्पराक लोकक स्वतन्त्रता कोना बाँचत। जयन्तक नाटक सामाजिक बहुलताक ऐतिहासिक दस्तावेज जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा आधुनिक अधिकार-धारणाक सीधा पूर्वरूप मानब कालक्रमगत भूल होयत।

संकलनमे अंग्रेजी विभाग ‘Much Ado About Religion’क शीर्षकसँ उपस्थित अछि। मैथिलीक ‘आगमडम्बरम्’क संग एहि शीर्षकक सम्बन्धमे ‘डम्बर’क व्यंग्यार्थ तथा अंग्रेजी ‘much ado’क हास्यात्मक प्रभावक तुलना विशेष उपयोगी अछि। मूल संस्कृतक आलोचित पाठ उपलब्ध कराए बिना नाटकक समस्त दार्शनिक पदक शाब्दिक निष्ठा प्रमाणित करब उचित नहि; वर्तमान निष्कर्ष मैथिली प्रस्तुति, ओकर अंग्रेजी रूप आ स्रोतक आन्तरिक तर्कसँ सम्बन्धित अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 2; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

03 भगवदज्जुकम् : देह-आत्माक विपर्यय आ प्रहसनक दर्शन

मूल रचनाकार : बोधायन

संयुक्त संस्करणक तेसर पुस्तक ‘भगवदज्जुकम्’ कैं ‘साधु आ वेश्या’ शीर्षकसँ प्रस्तुत करैत अछि। पात्रपञ्जीमे सूत्रधार, विदूषक, साधु, शाण्डिल्य, वसन्तसेना, परिचारिका, माय, प्रेमी, वैद्य आ मृत्युक दूत अंकित छथि। ई सूची मात्र हास्यक संचालक नहि; शरीरक स्थिति आ सामाजिक पहिचानक बीच विसंगति उत्पन्न करबाक बहुस्तरीय व्यवस्था सेहो अछि। साधुक ज्ञान-दावा आ शिष्यक देहगत आवश्यकता विपरीत धरातलपर अछि।

मुख्य नाटकीय संकट आत्माक देह-परिवर्तन आ ओकरा सँ उपजल भाषिक तथा व्यवहारिक विसंगतिसँ बनैत अछि। एक देहमे आन व्यक्तित्व प्रवेश करिते सम्बोधन, इच्छा आ सामाजिक अपेक्षा बदलि जाइत अछि। एही परिवर्तनसँ ‘हम के छी’ प्रश्न हास्यक भीतर सँ उठैत अछि। नाट्यशास्त्रीय दृष्टिसँ प्रहसन शरीरकेँ प्रमाणक वस्तु बनबैत अछि; दर्शनक दृष्टिसँ शरीरक निरन्तरतामात्रे व्यक्तित्वक निरन्तरता सिद्ध नहि करैत अछि। दुनू विधाक अन्तर्सम्बन्ध एहि कृतिक विशेष उपलब्धि अछि।

मृत्युक दूतक आवागमन, वैद्यक चिकित्सीय दृष्टि आ सम्बन्धीजनक चिन्तामे ‘ज्ञान’क तीन भिन्न व्यवस्था अछि। वैद्य जे देह देखि निर्णय करैत छथि, प्रियजन जे पूर्व सम्बन्धक आधारपर पहिचान करैत छथि, आ साधु जे आत्माक अलग अस्तित्वक दावाक आधारपर क्रिया करैत छथि—हिनकर विरोध नाटकक क्रियाशील तर्क थिक। हास्यक जन्म केवल गलतफहमीसँ नहि, प्रत्यक्ष संकेत आ स्वीकार्य सामाजिक पहिचानक असहमतिक कारण होइत अछि।

नाटकमे वसन्तसेनापर ‘वेश्या’ परिचय देल गेल अछि। ओकरा मात्र व्यंग्य-वस्तु मानि लेबाक बदला स्त्री-पात्रक इच्छा, परिवारक प्रतिक्रिया आ पेशागत पहिचानक सामाजिक अर्थ पढ़बाक आवश्यकता अछि। प्रहसनक मौलिकता तखने स्थापित होइत अछि जखन स्त्रीक देहकेँ हास्यक उपकरण बनयबाक संरचनागत सीमा सेहो चिन्हल जाय। एहि विवेकक बिना दार्शनिक चिन्तन स्त्री-विषयक असमानता कैं ओझराइ सकैत अछि।

अन्तिम दृश्यमे लौटैत आत्मिक पहिचानक संग नाटकीय अव्यवस्था क्रमशः समाप्त होइत अछि। अंग्रेजी विभाग ‘The Ascetic and the Courtesan’ मैथिली पाठक बाद देल गेल अछि। ई द्विभाषिक क्रम संवादक गति, शिष्यक व्याकुलता, नाटकीय संकेत आ सम्बन्धसूचक सम्बोधनक तुलना लेल उपयोगी अछि। खण्ड ४४क रेडियो-पटकथा संग ई पाठ जोड़ि ध्वनि-द्वारा आत्मा-परिवर्तन केना श्रव्य होइत अछि, तकरा पृथक् अध्ययनमे पुनः देखबाक चाही; ताहिमे साहित्यिक अनुवाद आ रेडियो रूपान्तरणक इकाईक भेद बनल रहत।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 3; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

04 भल्लट-शतक, कलाविलास आ कलियुग-विडम्बना : व्यंग्यक तीन शिल्प

मूल रचनाकार : कवि भल्लट, क्षेमेन्द्र आ नीलकण्ठ

ई संयुक्त पुस्तक-समूह तीन भिन्न सर्जनात्मक पद्धतिक परिचय करबैत अछि। भल्लटक शतक अन्योक्ति-आश्रित संक्षिप्त काव्य अछि, क्षेमेन्द्रक ‘कलाविलास’ दस सर्गक विषयक्रममे सामाजिक वृत्तिक विडम्बना रचैत अछि, आ नीलकण्ठक ‘कलियुग-विडम्बना’ तेरह विषय-खण्डक सहायतासँ संस्थागत छलकेँ चिन्हैत अछि। एकहि पोथीमे तीनू रचनाकेँ राखब व्यंग्यक एकरूपता नहि, ओकर भिन्न-भिन्न व्याकरण देखयबाक अवसर थिक।

भल्लट-शतक : अन्योक्ति आ व्यञ्जना

भल्लट-शतकक आरम्भे मङ्गलाचरणक बाद सूर्यक प्रथम किरण आ अन्य प्रकृतिचित्रसभ अबैत अछि। अन्योक्तिक आलोचना करैत वस्तु-चित्रकेँ तत्काल मानव-रूपकमे बदलि देब उचित नहि। प्रकृतिसँ उपजल बिम्ब स्वतन्त्र दृश्य-सौन्दर्य राखैत अछि, तकर बाद सामाजिक व्यञ्जना जन्म लैत अछि। कथित शतकक श्लोक-संख्या, पाठभेद आ क्रमक प्रामाणिकता बुझबाक लेल संस्कृतक स्वतंत्र पाठ चाही; एहि संकलनमे मैथिली प्रस्तुति अपन अध्ययनक प्रथम आधार थिक।

कलाविलास : दम्भसँ सद्गुण धरि

‘कलाविलास’क दस सर्गमे दम्भ, लोभ, काम, वेश्याक व्यवहार, लेखनिक, मद, गायक, सोनार, विविध दुष्ट आ समस्त कलाक चर्चा क्रमबद्ध अछि। एकर सामाजिक दृष्टि व्यक्ति-विशेषक निन्दासँ आगाँ जा कऽ पेशागत सत्ता आ जीविकाक नैतिक समस्याकेँ छूबैत अछि। मुदा व्यंग्यकार जे वर्गक वर्णन करैत छथि, ओहि वर्गक सभ सदस्य समान होइत छथि—एहन अनुमान कृतिक आलोचना नहि। दम्भक सार्वत्रिक विस्तार आ गायक-सोनार सन वृत्तिक अलग व्यंग्य मध्य व्याप्त सामान्यीकरणक प्रश्न राखब आवश्यक अछि।

कलियुग-विडम्बना : संस्थागत कपट

‘कलियुग-विडम्बना’क पण्डित, मन्त्र-तान्त्रिक, ज्योतिषी, वैद्य, कवि, सम्बन्धी, महाजन, धनी, चुगलखोर, कृपण, धर्मध्वजी आ दुष्टक विवेचना अन्ततः सार्वजनिक सदाचारक संकट बनि उठैत अछि। कृतिक धार्मिक वेश, अश्रु आ बाहरी साधनाक प्रदर्शनपर चोट ओहि दूरीकेँ उजागर करैत अछि जे व्यक्ति जे कहैत अछि आ जे करैत अछि, दुनूक बीच रहैत अछि। युग-विनाशक अतिशयोक्ति व्यंग्यक साहित्यिक उपकरण थिक; ओकरा सम्पूर्ण ऐतिहासिक कालक वस्तुनिष्ठ सामाजिक चित्र मानल नहि जाय।

तीनू पाठक मैथिली अनुवादमे कथ्यक संक्षिप्तता, सर्गक नामकरण आ देशज वाक्यक प्रभव अलग अछि। संयुक्त संस्करणमे बादमे अंग्रेजी पाठ सेहो अछि; विशेषतः श्लेष आ अन्योक्तिक दू अर्थ अंग्रेजीमे कोना सुरक्षित रहैत अछि, ई चिह्नित करबाक विषय अछि। शब्दशः संस्कृत–मैथिली तुलना लेल स्वतंत्र मूलपाठक आवश्यकता अलग दर्ज रहत।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 4; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

05 चतुर्भाणी : एकपात्रीय नाटकक चारि संसार

मूल रचनाकार : शूद्रक, ईश्वरदत्त, वररुचि आ श्यामिलक

मूल पुस्तक ‘चतुर्भाणी’ कैं चारिटा एकनट नाटकक संग्रह कहैत अछि। प्रस्तावनामे भाणकैं एकल पात्रद्वारा अभिनीत रूप मानल गेल अछि। मुदा एतय ‘एकनट’क अर्थ ‘एक व्यक्तिक संसार’ नहि। मंचपर एक देह रहैत अछि, मुदा ओकर कथनमे अनेक अदृश्य पात्रक संवाद, शहरी व्यवहार, व्यभिचार, धन, प्रतिष्ठा आ समाजक अनुशासन उपस्थित होइत अछि। अभिनयक वास्तविक चुनौती दर्शकक कल्पनामे अनुपस्थित व्यक्तिसभक उपस्थिति निर्मित करब थिक।

पद्मप्राभृतकम् — कमलक भेंट

शूद्रकक ‘पद्मप्राभृतकम्’ (‘कमलक भेंट’) वसन्तक पुष्प, कोयल, वायु आ विटक प्रवेशक सहायतासँ रसात्मक वातावरण बनबैत अछि। प्रकृतिक कोमल चित्रणक तुरन्त बाद शहरी कामुकता आ विटक चातुर्य मंचपर अबैत अछि। एहि बदलावक काव्यशास्त्रीय मर्म ई थिक जे ऋतु-वर्णन पात्रक इच्छा प्रकट करबाक नाटकीय भाषा बनि जाइत अछि। शहरक जीवनक व्यंग्य केवल घटनासँ नहि, विटक आत्मप्रदर्शनसँ सेहो उपजैत अछि।

धूर्तविटसंवादः — धूर्त आ विट

ईश्वरदत्तक ‘धूर्तविटसंवादः’क शीर्षकैं ‘धूर्त आ दलालक विचार-विमर्श’क रूप देल गेल अछि। ई रूपान्तरणमे सामाजिक भूमिकाक स्पष्टता बढ़ैत अछि; मुदा ‘विट’क अर्थकैं आजुक ‘दलाल’मे पूर्ण रूपसँ सीमित करब सम्भव नहि। मूल नाट्यव्यवस्थाक विट बहुधा नगरजीवनक कला, वाणी आ इन्द्रिय-चातुर्यसँ सम्बन्धित होइत अछि। एहि अर्थगत अन्तरपर अभिनयक स्वर आ कथनक व्यंग्य निर्भर करैत अछि।

उभयाभिसारिका — परस्पर प्रेम-पलायन

वररुचिक ‘उभयाभिसारिका’ (‘परस्पर प्रेम-पलायन’)मे परस्परताक शीर्षक प्रेमक इच्छाकैं एकतर्फा आदेशक बदला बहुपक्षीय निर्णयक रूपमे रखैत अछि। पात्र-उपस्थिति, नगरक गोपनीयता आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक तनाव एकनट रूपक भीतर अनेक स्वर बना दैत अछि। मैथिलीमे अप्रत्यक्ष संवादक पुनरावृत्ति

दर्शककेँ बारम्बार स्मरण करबैत अछि जे अभिनेता जकर उत्तर दैत अछि, ओ मंचपर प्रत्यक्ष नहि अछि।

पादताडितकम् — लात

श्यामिलक ‘पादताडितकम्’ (‘लात’) मे सामाजिक अपमान, नारीक देहगत प्रतिक्रिया आ दण्डक प्रश्न व्यंग्यात्मक विडम्बनासँ भरि जाइत अछि। अंग्रेजी विभागक अन्तिम अंशमे प्रायश्चित्तक अनेक परस्पर-विरोधी सुझाव मिलैत अछि; एकहि घटनाक नैतिक अर्थ सभ पात्र लेल एक सन नहि। नाटकक हास्य आ प्रतिष्ठाक पुरुषकेन्द्रित मानदण्डकेँ एक संग पढ़ला पर एकर आलोचनात्मक शक्ति आ सीमा दुनू प्रकट होइत अछि।

चारू भाणक समग्र मूल्याङ्कनमे शब्दक लय, एकल अभिनेताक संवादानुकरण, अदृश्य श्रोता-प्रतिक्रिया आ मंचीय समय-व्यवस्थाकेँ अलग-अलग कसौटी बनएबाक चाही। अंग्रेजी खण्डमे 'CHARTURBHANI' सन लिप्यन्तरण-भेद भेटला पर ओकरा मात्र मुद्रण-त्रुटि कहबासँ पहिने संस्करणक नामांकन परखल जाय। स्रोतक भीतर मैथिली आ अंग्रेजी पाठ दुनूक उपस्थिति अनुवाद-नाटचक अध्ययन लेल उपयोगी अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 5; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

06 दामक प्रहसनम् : रचनाकारक अनिश्चितता आ नाटकीय व्यंग्य

मूल रचनाकार : रचनाकार अनिश्चित; स्रोतमे ‘सम्भवतः भास’

प्रकाशकीय विवरणमे मूल ग्रन्थकारक नाम निश्चित रूपसँ नहि देल गेल; ‘सम्भवतः भास रचित’ लिखल अछि। एहि कारणेँ कृतिक लेखकत्वक विषयमे विधागत जिम्मेदारी आवश्यक अछि। भासक नाट्यशैलीसँ समानता भेटब आ भासक लेखकीयता सिद्ध होयब दू भिन्न निष्कर्ष अछि। वर्तमान संस्करणक कृति-पञ्जी, पात्र आ मूल संवादक आधारपर रचनाक मूल्याङ्कन सम्भव अछि, मुदा लेखकक निश्चित जीवनकाल वा ऐतिहासिक स्थानक दावा अलग स्रोत बिना नहि करब चाही।

विषय-सूचीमे पात्र-परिचय, प्रस्तावना, दामकक प्रवेश, परशुराम आ कर्ण, दुर्बुद्धि–दुर्मुख तथा भरतवाक्य देल अछि। नटी आ सूत्रधारक प्रारम्भिक संवादमे नगर-राजाक नामक उलट-पुलट स्वयं हास्य उपजबैत अछि। राजा आ नगरीक नाम परस्पर गलत कहि देबाक प्रक्रिया राजनीतिक प्रतिष्ठाक कृत्रिमता पर व्यंग्यक संकेत बनैत अछि; श्रोताक ऐतिहासिक ज्ञान एतय हँसीक एक स्रोत थिक।

दामकक प्रवेश विपत्तिक अनुगमनक कथनसँ आरम्भ होइत अछि। एहि वाक्यमे व्यक्तिगत दुर्भाग्य सामूहिक सार्वजनिक हास्य बनि जाइत अछि। परशुराम आ कर्णक प्रसंग नाटकीय अधिकारक मिथकीय स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। एतय महत्वपूर्ण प्रश्न ई नहि जे कर्णक जीवनक समस्त काव्यपरम्परा एहि संक्षिप्त प्रहसनमे उपस्थित अछि वा नहि; प्रश्न ई अछि जे चुन्नल मिथकीय संकेत तत्कालीन पात्रक व्यवहारक आलोचना कोना करैत अछि।

अन्तिम भरतवाक्यमे सुख आ अनिष्टक निवृत्तिक मंगल-कामना अछि। व्यंग्यक उग्रता आ समापनक सार्वभौम कल्याण-वाक्यक बीच सर्जनात्मक अन्तर रहैत अछि। ई पारम्परिक नाट्य-समापनक सामाजिक कार्य होइत अछि: दर्शक कठोर उपहास सुनलाक बाद एक सामूहिक मंगलक कल्पनामे फेर प्रवेश करैत छथि। एहि अन्तरालक निरीक्षण प्रहसनक रूप-विधान बुझबामे विशेष सहायक अछि।

मैथिली पाठक बाद अंग्रेजी रंगमंचीय संस्करणमे सेहो लेखकत्व लेल 'Possibly by Bhāsa'क सावधानी अछि। स्रोतक एहि अनिश्चितताकेँ अंग्रेजी समीक्षा वा पुस्तकक आवरणमे निश्चित तथ्य बना देब अनुचित होयत। पाठ-विन्यास आ लेखकत्व-संशय दुनूकेँ एक संग सुरक्षित राखब एहि कृतिक सम्पादकीय नैतिकता थिक।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 6; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

07 हास्यार्णवप्रहसनम् : नामकरण, व्यवस्था आ व्यंग्यक महासागर

मूल रचनाकार : जगदीश्वर भट्टाचार्य

‘हास्यक सागर’क मूल शीर्षक ‘हास्यार्णवप्रहसनम्’ अछि। स्रोतक पात्र-सूचीमे अनयसिन्धु, कुमतिवर्मा, विश्वभण्ड, कलहाङ्कुर, व्याधिसिन्धु, मिथ्यार्णव, साधुहिंसक आदि नाम मात्र पहिचान नहि; पहिनहिसँ व्यंग्यक नैतिक संकेत दैत अछि। नाममे दोषक घोषणा पाठककेँ पात्रक व्यवहार बुझबाक एक पूर्वनिर्धारित दृष्टि दैत अछि। मुदा एहि उपायसँ पात्रक स्वाभाविक जटिलता घटबाक जोखिम सेहो अछि—ओहि क्षतिपर चर्चा बिना कृतिक हास्यक मूल्याङ्कन अधूरा रहत।

प्रस्तावना वसन्त, काम, सुगन्ध आ मञ्चीय आनन्दक भाषासँ आरम्भ होइत अछि। एतय रसात्मक प्रकृति-वर्णनसँ भ्रष्ट संस्था आ मनुष्यक विकृतिक उपहास दिश गति होइत अछि। प्रहसनमे शृंगारक अतिरंजना स्वयं व्यंग्यक धरातल बनैत अछि। पाठक जँ नाटककेँ मात्र अशिष्ट भाषा अथवा स्वैराचारक संग्रह मानि लेथि तँ लेखकक योजनाबद्ध विरोधाभास ओझराइ जायत।

राजा अनयसिन्धुक नाममे ‘अनय’ अर्थात् अव्यवस्थाक आ ‘सिन्धु’ अर्थात् महासागरक रूपक अछि। राजसत्ता वृहत्तर अनैतिकताक केन्द्र बनि जाइत अछि। ओकर सहयोगी पात्रसभक नामकेँ जोड़ि पढ़ला पर एकटा नैतिक भूगोल निर्मित होइत अछि, जतय दुराचारक परस्पर पोषण होइत अछि। ई व्यवस्था व्यक्ति-दोषसँ बेसी संस्थागत विकृतिक संकेत करैत अछि, मुदा पाठमे समूचा समाजक सर्वांग इतिहास खोजबाक अपेक्षा अतिशयोक्ति-आश्रित नाटकीय संरचना पहिने देखबाक चाही।

पात्रसभक भाषणमे अशोभनीय आ विनोदी शब्दक उपयोगक समीक्षा करैत मूल पाठक सामाजिक परिस्थिति, कथकक अभिप्राय आ श्रोताक सम्भावित प्रतिक्रिया जोड़बाक चाही। अशिष्टता अपन-आप साहित्यिक दोष नहि; ओकर प्रयोजन आ आलोचनात्मक दूरी महत्त्वपूर्ण अछि। जखन व्यंग्यकार अन्यायपर चोट करैत छथि तखन अपमानित सामाजिक वर्गक आवाज सेहो उपस्थित होइत अछि कि नहि—ई प्रश्न नाटकक सीमाकेँ चिन्हबैत अछि।

संकलनमे अंग्रेजी अनुवादक प्रकाशकीय टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे ओ मैथिली संस्करणक अनुवाद थिक। तँ संस्कृत–मैथिली–अंग्रेजी त्रिस्तरीय

शृंखलामे अंग्रेजीकेँ प्रत्यक्ष संस्कृत मूलक स्वतन्त्र अनुवाद नहि मानल जाय। व्यक्तिनामक अर्थ, हास्यक स्थानीय ध्वनि आ संवादक सामाजिक सम्बोधनक तुलना एहि स्तरीय अन्तरकेँ ध्यानमे राखि करबाक चाही।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 7; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

08 कादम्बरी : कथाभीतर कथा, वर्णनाक विस्तार आ कालक आवर्तन

मूल रचनाकार : बाणभट्ट आ भूषणभट्ट

संयुक्त संस्करणमे कादम्बरीक पूर्व भाग बाणभट्ट आ उत्तर भाग भूषणभट्टक नामसँ अलग चिन्हित अछि। सम्पादकीय प्रस्तुति एहि दोसर लेखकत्वकेँ लुकबैत नहि, स्पष्ट करैत अछि। एतय लेखकत्वक प्रश्न केवल जीवनचरितक सूचना नहि: पूर्व भागक अलङ्कारपूर्ण लम्बा वाक्यविन्यास आ उत्तर भागक कथासमापनक गति एकहिटा कला-विश्वमे कोना स्थान पबैत अछि, ई जाँचबाक प्रश्न अछि।

मैथिली पूर्व भागक प्रारम्भमे मङ्गलाचरण, वंशपरिचय, काव्य-विधान आ गुणी–दुष्टक तुलना लम्बा वर्णन-शृंखलामे अछि। एहि आरम्भमे कथाकार कथा कहबाक पहिने अपन वाणी, संरक्षण आ साहित्यिक परम्पराक स्थान निर्धारित करैत छथि। आधुनिक कथाक द्रुत घटनागत अपेक्षाकेँ एहि गद्यक एकमात्र कसौटी बनायब उचित नहि। एतय विवरण अपन-आप रसात्मक अवकाश अछि, जकर भीतर समय विस्तार पबैत अछि आ कथाक उपकथा परत-दर-परत खुलैत अछि।

कादम्बरीक कथाभीतर कथाक गठनमे कथक-स्तरक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि। पात्र जे गप सुनैत अछि, पाठक ओहि कथा कहबाक परिस्थिति सेहो सुनैत अछि। स्मृति, पुनर्जन्म आ प्रतीक्षाक विषय एही कथात्मक आवर्तनसँ भावात्मक अर्थ प्राप्त करैत अछि। पुनरावृत्ति केवल अलङ्कारक शौक नहि; दीर्घ स्मृतिक साहित्यिक रूप थिक।

मूल संग्रहमे पात्रक प्रेम आ विरहकेँ एकहि क्षणक घटना जकाँ नहि, दीर्घकालिक चित्तस्थिति जकाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। साहित्यिक मूल्याङ्कनमे प्रश्न ई उठैत अछि जे वर्णनात्मक समृद्धि पात्रक आन्तरिक जीवन गाढ़ करैत अछि अथवा कथानकक बिन्दु सभकेँ ओझरा दैत अछि। दुनू प्रवृत्ति सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि। विशेषत: उत्तर भागक समापनपर एहि तनावक परिणाम देखबाक चाही।

अंग्रेजी विभागमे ‘Following the English text supplied for this edition’ कहल गेल अछि। एहि वाक्यकेँ संस्कृतसँ स्वतन्त्र प्रत्यक्ष अंग्रेजी अनुवादक

प्रमाण नहि मानल जाय। मैथिली-भागक बाणभट्ट–भूषणभट्ट विभाजन आ अंग्रेजीक समकक्ष खण्ड देखला पर गद्य-सङ्कोच, नामरूप आ रूपक-वाक्यक परिवर्तित गठनक परीक्षण सम्भव अछि। मूल संस्कृत गद्यक वाक्य-क्रमक अन्तिम निष्ठा जाँचबाक लेल अलग आलोचित संस्करण अपेक्षित अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 8; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

09 मृच्छकटिकम् : नगर, प्रेम, न्याय आ जनसत्ता

मूल रचनाकार : शूद्रक

‘माटिक खेलौना-गाड़ी’क पात्रपञ्जीमे चारुदत्त, हुनकर पुत्र रोहसेन, वसन्तसेना, मैत्रेय, संस्थानक, शर्विलक, मदनिका, आर्यक, जुआघरक लोक, आरक्षी आ जल्लाद धरि सामाजिक स्तरक विस्तृत उपस्थिति अछि। एहि बहुचरित्रात्मक फैलावमे नगर केवल रंगमंचक स्थान नहि; समाजक वर्गीय सम्बन्ध आ संस्थागत न्याय-अन्यायक सक्रिय चरित्र बनि जाइत अछि। एतय ब्राह्मण व्यापारी चारुदत्तक गरीबीक प्रतिष्ठा आ गणिका वसन्तसेनाक धनी होइतो सीमित सामाजिक स्वीकृति एक दोसरा सँ टकराइत अछि।

वसन्तसेनाक आभूषणक आवागमन कथात्मक गति पैदा करैत अछि। एखन ई वस्तु प्रेमक भरोसा, धनक मूल्य, चोरिक दोष आ न्यायालयक संभावित साक्ष्य, सभ किछुक प्रतीक बनि जाइत अछि। शर्विलकक चोरीक प्रसङ्गमे मदनिकाक प्रतिक्रिया नैतिक द्वैधता उजागर करैत अछि: प्रिय व्यक्तिक निजी उद्देश्य आ सामाजिक न्याय एक बात नहि। एहि ठाम नाटक सहज नायक-खलनायक विभाजनसँ आगाँ बढ़ैत अछि।

आर्यकक आगमन आ चारुदत्तक गाड़ीमे नुकेनाइ राजनीति आ निजी नैतिकताकेँ जोड़ैत अछि। राजा पालकक व्यवस्थासँ भागैत एक व्यक्ति, जे बादमे सत्तामे अबैत अछि, ओकरा आश्रय देब सामान्य दयालुता मात्र नहि; राजकीय दण्डव्यवस्थाक सोझाँ असहमतिक कार्य सेहो अछि। एहि प्रसङ्गसँ नाटकक राजनीतिक आयाम प्रेमक कथा पर अनावश्यक रूपसँ आरोपित नहि, कथागत घटनासँ उपजैत अछि।

न्यायालयक दृश्यसभमे साक्ष्य, आरोप, पूर्वाग्रह आ प्रतिष्ठाक सम्बन्ध खुलैत अछि। संस्थानकक राजकीय सम्बन्ध अपराधक शङ्का आ दण्डक वितरणपर प्रभाव डालैत अछि। चारुदत्तक सार्वजनिक सद्गुण अपना-आप कानूनी सुरक्षा प्रदान नहि करैत अछि। ई विभेद आजुक पाठककेँ महत्त्वपूर्ण लगैत अछि, मुदा आधुनिक दण्डविधानक शब्दमे प्राचीन नाटकक सभ संस्था बुझा देब अनुचित होयत। समानता साहित्यिक प्रश्नमे अछि, संस्थागत इतिहासक शाब्दिक समानतामे नहि।

स्रोतमे मैथिली विभागक बाद विस्तृत अंग्रेजी पाठ अछि। पाठक बीच-बीचमे मैथिलीक किछु अल्पप्रचलित क्रियारूप आ हिन्दीप्रभावी वाक्यरचना देखैत छथि; भाषा-निखारक मूल्याङ्कन ओहि रूपक वास्तविक पात्र-स्वर आ अनुवादकालक सम्भावना देखिकऽ करबाक चाही, सामान्य निषेधक रूपमे नहि। आभूषण, गाड़ी, आश्रय आ आरोपक समान घटनासभक अंग्रेजी रूप देखिते अर्थान्तरक तुलनात्मक क्षेत्र स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 9; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

10 मत्तविलास प्रहसनम् : सम्प्रदायगत उपहास आ भिक्षापात्रक खोज

मूल रचनाकार : महेंद्रविक्रमवर्मन् प्रथम

मत्तविलास प्रहसनम्क प्रकाशकीय सूचनामे पल्लव नरेश महेंद्रविक्रमवर्मन् प्रथमक नाम अछि। कृतिक मुख्य हास्यक केन्द्र कापालिकक भिक्षापात्रक हेराएब आ तकरा पाछाँ उत्पन्न संशय अछि। पात्रक धार्मिक परिचय आ व्यक्तिगत आचरणक बीच टकराव एहि प्रहसनक मूल गति पैदा करैत अछि। कापालिकक ‘प्रमाण’ प्रायः अपन इच्छा वा पूर्वाग्रहक अनुसरण करैत अछि; एतय नाटक उपहासक सहायतासँ ज्ञानक विश्वसनीयतापर प्रश्न करैत अछि।

सोमदेवाक संग कापालिकक संवाद नाटककेँ केवल दार्शनिक बहस नहि रहय दैत; मद, आकांक्षा आ आत्मभ्रमक देहगत अभिनय सम्भव करैत अछि। भिक्षापात्रक वस्तुगत खोजक भीतर धार्मिक संस्थाक प्रतिष्ठा आ निजी तृष्णाक हास्यास्पद योग बनैत अछि। पात्र जे विचारक प्रतिपादन करैत अछि, ओकर व्यवहार ओहि विचारक नैतिक परिणामसँ अलग होइत अछि। एहि अन्तरमे व्यंग्यक धार अछि।

सम्प्रदायगत मतभेद एतय दार्शनिक सभाक समान निष्पक्ष बहस नहि। लेखक व्यंग्य रचबाक लेल किछु परम्पराक विकृत रूप प्रस्तुत करैत छथि। तेँ नाटकीय पात्रक अवगुणकेँ कोनो ऐतिहासिक सम्प्रदायक सभ सदस्यपर लागू करब साहित्यिक पाठ आ सामाजिक इतिहास दुनूक अन्याय होयत। नाटकक धर्मालोचना आलोचनात्मक दृष्टिसँ पढ़ल जाय, पूर्वाग्रहक पुष्टिकरणक साधन जकाँ नहि।

हेरायल वस्तुकेँ जे-जे व्यक्ति अपन ज्ञानक आधारपर पहिचान करबाक दावा करैत अछि, ओहि दावाक परीक्षण प्रत्यक्ष व्यवहारसँ होइत अछि। ई संरचना ‘नव्य-न्याय’क शास्त्रीय प्रमाण-विभागक व्यवस्थित पाठ नहि, मुदा ज्ञान आ अनुमानक लोकनाटकीय विफलताक सूक्ष्म उदाहरण बनि सकैत अछि। नाटकीय हँसी प्रमाणक दार्शनिक शब्दावलीक पूर्वसन्निवेश बनबैत अछि, ओकर स्थानापन्न नहि।

खण्ड ४४क रेडियो-नाटक मार्गदर्शिकामे एहि कृतिक ध्वनिरूपक उदाहरण देल गेल अछि। मूल मंचीय कापालिक–सोमदेवा संवादमे जे देहभङ्गिमा, नेपथ्य आ पात्र-दूरी अछि, रेडियोमे ओकरा ध्वनि-सूचक बनएबाक प्रश्न उठत। खण्ड ४३क

निष्कर्ष एखन मूल मैथिली अनुवाद आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठक साहित्यिक परीक्षण धरि सीमित राखल गेल अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 10; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

11 मुद्राराक्षसम् : मुद्रिका, गुप्तचर आ राजसत्ताक नैतिक गणित

मूल रचनाकार : विशाखदत्त

‘मंत्री राक्षसक राजसी मोहर’क मूल नाटक मुद्राराक्षसम् सात अङ्कमे विभाजित अछि। चाणक्य, चन्द्रगुप्त, राक्षस, मलयकेतु, चन्दनदास आ अनेक गुप्तचरक परस्पर सम्बन्ध कथाक चालित शक्ति अछि। एकरा केवल चाणक्यक विजयगाथा मानल जाय तँ राक्षसक अटूट निष्ठा आ मित्रताक नैतिक महत्त्व ओझरा जायत। नाटकक रुचि एहि बातमे सेहो अछि जे पुरान शत्रुकेँ अपमानित करबाक बदला राजनीतिक प्रशासनमे स्थान देबाक योजना कोन साधनसँ सिद्ध होइत अछि।

मुद्रिका आ पत्रक माध्यमसँ जालसाजी, गवाही, विश्वासघातक संशय आ राजकीय संदेशक अधिकार एक-दोसरामे गुँथल अछि। वस्तु एहि नाटकमे केवळ प्रतीक नहि; सत्ताक वैधता निर्धारित करबाक व्यावहारिक उपकरण अछि। मलयकेतुक दरबारमे आभूषण आ पत्रक जोड़ा साक्ष्य बनैत अछि, मुदा साक्ष्यक रचनाकार स्वयं षडयन्त्रकारी छथि। एतय प्रश्न ई उठैत अछि जे जे देखाइत अछि से सत्य अछि, आकि कुशलतासँ बनाओल गेल विश्वसनीयता।

राक्षसक नन्दवंशक प्रति निष्ठा व्यक्तिगत मित्रधर्मक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि, जखन चाणक्यक परियोजना बदलैत राज्यव्यवस्थाक स्थायित्व पर केन्द्रित अछि। दुनू पात्रक लक्ष्यक टकरावक बीच नाटक केकरो पूर्ण नैतिक निष्कलङ्कता स्वतः प्रदान नहि करैत। चाणक्यक प्रभावी नीति साधनक शुचितापर प्रश्न उठबैत अछि; राक्षसक निष्ठा सेहो राजनीतिक दूरदृष्टिक विकल्प नहि होइत अछि। एहिसँ नाटक राजनीतिक बुद्धि आ नैतिक न्यायबीचक अन्तर खुलल राखैत अछि।

अन्तिम अङ्कमे राक्षसकेँ प्रशासकीय अधिकार देल जाएबाक दृश्य आ मलयकेतुक जीवन बचेबाक निर्णय विजयकेँ दमनक बदला पुनर्व्यवस्थाक कथा बनबैत अछि। मुदा ई समापन तक पहुँचबाक हिंसक अथवा छलपूर्ण उपाय स्वतः निर्दोष नहि भऽ जाइत अछि। नाटकीय फल आ नैतिक साधनक ई भेद आधुनिक पाठक लेल महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा प्राचीन राज्यशास्त्रक सन्दर्भक अनदेखी कऽ समकालीन पक्षधरता आरोपित करब सेहो अनुचित होयत।

स्रोतक मैथिली भागक बाद अंग्रेजी मंचीय पाठ देल अछि, जाहिमे अन्तिम राजनीतिक क्षमादान आ राक्षसक आग्रह स्पष्ट देखाइत अछि। ‘मुद्रा’, ‘मोहर’ आ ‘sealed letter’क शब्दरूपमे वस्तुक प्रामाणिकताक अर्थ सम्भवतः बदलैत अछि। ई अर्थगत परिवर्तनक अध्ययन दार्शनिक प्रमाणक आधारपर नहि, कथानकक भौतिक वस्तु-प्रमाणक सन्दर्भमे करबाक चाही।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 11; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

12 पालाण्डुमण्डन प्रहसनम् : भोजन, जातिगत पद आ संस्कारक हास्य

मूल रचनाकार : हरिजीवन मिश्र

हरिजीवन मिश्रक एहि प्रहसनमे पात्रसभक नाममे प्याज, लहसुन, इमली, मीठ पूआ, कांजी, कन्द, दहीयुक्त व्यञ्जन आदि खाद्यपदार्थक छवि जोड़ल गेल अछि। पालाण्डुमण्डन एक पैघ प्रकारक प्याजक नामसँ सम्बन्धित, लशुन पन्त लहसुनक संकेत आ पूर्णपोलिका मीठ पूआक संकेत रखैत अछि। नाम आ आहारक एहि घुलानमे देहक भोग आ शास्त्रीय वर्जनाक बीच व्यंग्यात्मक संघर्ष उपजैत अछि।

प्रस्तावनामे गर्भाधान-संस्कारक आयोजन, अतिथिक आमन्त्रण आ सुगन्ध-दुर्गन्धक विनिमय नाटकीय अवसर बनैत अछि। कने देरमे कथित श्रेष्ठ कुलक सामाजिक व्यवहार खाद्य-संकेतक सामने हास्यास्पद भऽ उठैत अछि। शास्त्रीय संस्कारक औपचारिक भाषाकेँ रोजमर्रा भोजनक देहगत यथार्थ बाधित करैत अछि। एहि शैलीमे भोजनक शब्दावली मात्र सजावट नहि; सामाजिक पदानुक्रमक आलोचनाक भाषा थिक।

महाराष्ट्रीय, दाक्षिणात्य, आन्ध्र आ बंगाली संकेतवला पात्रक उपस्थिति प्रहसनक भूगोल बढ़बैत अछि। मुदा क्षेत्रीय नामक विनोद आ वास्तविक लोकसमुदायक सामाजिक चरित्र एक बात नहि। अनुवादक लेल सभसँ पैघ प्रश्न एतय शब्दार्थ, व्यञ्जन-नाम आ शास्त्रीय संकेत एके समय कोना सुरक्षित राखल जाय। जँ भोजनक पदक अर्थ टिका मे बुझाओल जाय तँ पाठक दृश्यक विनोद समझि सकैत छथि; जँ सभकेँ सामान्य ‘खाद्य’ बना देल जाय तँ विशेष व्यंग्य नष्ट भऽ जायत।

कृतिक हास्य केवल पण्डितक अवगुण गनाएबामे नहि; प्रतिष्ठा, शुचिता, स्वाद आ अधिकारक असंगत संगम सामने रखबामे अछि। पात्र अपन सामाजिक श्रेष्ठताक दावा करैत छथि, मुदा हुनकर देह आ स्वाद ओहि दावाकेँ बारम्बार काटैत अछि। एहि कारण नाटकक सामाजिक अर्थ देहकेँ निम्न कहि दण्ड देब नहि, औपचारिक श्रेष्ठताकेँ सार्वजनिक हँसीक सोझाँ रखब थिक।

मैथिली विभागक बाद अंग्रेजी पाठमे ‘A FARCE BY HARIJIVAN MISHRA’ कहल अछि। क्षेत्रीय खाद्यनामक अंग्रेजी रूप देबामे ध्वनि जँ बचैत अछि तँ अर्थ टिका चाही, आ अर्थ जँ बचैत अछि तँ सांस्कृतिक स्वादक हानि सम्भव अछि। एहि द्विविधाकेँ अनुवादक त्रुटि कहबाक बदला कृतिक विशिष्ट भाषिक चुनौतीक रूपमे परखब उचित होयत।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 12; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

13 उत्तररामचरितम् : करुणा, राजधर्म आ स्मृतिक पुनर्निर्माण

मूल रचनाकार : महाकवि भवभूति

‘उत्तररामचरितम्’क सात अङ्कक मैथिली अनुक्रममे चित्रशाला-दर्शन, पञ्चवटीमे प्रवेश, छाया, कौसल्या–जनकक भेट, कुमारक पराक्रम, कुमारसभक अभिज्ञान आ पुनर्मिलन देल अछि। एहि नामसभमे नाटकक खास प्रवृत्ति स्पष्ट होइत अछि: बाहरी राजनीतिक घटना ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि जतेक पूर्वकर्मक स्मृति, पश्चात्ताप आ सम्बन्धक विच्छेद। आरम्भक चित्रशाला दृश्य अतीतक उपस्थितिक मञ्चीय विधि थिक। चित्र जखन स्मृति जगबैत अछि तखन अभिनेता अनुपस्थित व्यक्ति आ बीतल क्षण दुनूकेँ फेर उपस्थित करैत अछि।

रामक लोकसम्मानक चिन्ता आ सीताक प्रति व्यक्तिगत प्रेमक बीच संघर्ष नाटकक नैतिक केन्द्र अछि। राजधर्मक नामपर लेल निर्णयक यातना नायकक अन्तःकरणमे रहि जाइत अछि; राजकीय पद ओकरा पीड़ासँ मुक्त नहि करैत अछि। मुदा एहि पीड़ाकेँ सीताक भोगल अन्यायक बराबर मानि लेब समीक्षाक भूल होयत। एक व्यक्तिक निर्णयक राजकीय शक्ति आ दोसर व्यक्तिक सीमित विकल्पक अन्तर करुणाकेँ सामाजिक गहिराइ प्रदान करैत अछि।

तृतीय अङ्क ‘छाया’ मे अनुपस्थितिक नाटकीय उपस्थिति प्रमुख बनैत अछि। छाया जकाँ अनुभूतिक अर्थ केवल दृश्यभ्रम नहि; ओ स्मृति, अपराधबोध आ प्रेमक ओहि अवशेषकेँ देखबैत अछि जे समयक पार सहजे नहि मिटैत। भवभूतिक करुणरस ई दीर्घता सँ निर्मित अछि। केवल कोन घटना भेल, कोन पात्र प्रवेश कएल, एहि वृत्तान्तसँ रसक अनुभव पकड़ल नहि जा सकैत।

पाँचम आ छठम अङ्कमे लव-कुशक शौर्य आ पहिचान पीढ़ीगत निरन्तरता बनबैत अछि। बालकसभक परिचय परिवारक निजी मामला मात्र नहि; राज्य, वंश आ सत्यक सार्वजनिक स्वीकृतिक प्रश्न सेहो अछि। नाटकीय अभिज्ञान जखन पूर्ण होइत अछि तखन ई प्रश्न शेष रहैत अछि जे विगत अन्यायक भरपाइ केना सम्भव होयत। एतय पुनर्मिलन भावात्मक समाधान दैत अछि, न्यायशास्त्रीय समाधान नहि।

स्रोतमे अंग्रेजी विभाग ‘Rama’s Last Act’ उपस्थित अछि, आ अन्तिम दृश्यमे सीता–राम–लव–कुशक आलिङ्गनक दृश्य लिखल अछि। मैथिली सम्बोधनक आत्मीयता अंग्रेजी मंचीय वाक्यक औपचारिकतासँ कोना भिन्न अछि, ई

तुलनात्मक प्रश्न उठैत अछि। सात अङ्कक पूरा पाठकेँ एकहि भावमे समेटि देबाक बदला चित्रशाला, छाया, अभिज्ञान आ नाट्यान्तक अलग कार्य देखने एहि कृतिक सर्जनात्मक विशिष्टता स्पष्ट होइत अछि।

मूल पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण, पुस्तक-समूह 13; सम्बन्धित मैथिली विभाग आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ।

अन्तरकृतिगत तुलनात्मक अनुशीलन

कालिदासक अभिज्ञानशाकुन्तलम् आ भवभूतिक उत्तररामचरितम् दुनू स्मृति-अभिज्ञानक नाटक अछि, मुदा पहिल कृतिमे विस्मृतिक कारण व्यक्तिगत प्रेम आ राजकीय स्वीकृतिक विच्छेद बनैत अछि, दोसरमे राजकीय निर्णय अतीतक लम्बा पश्चात्ताप बनि जाइत अछि। दुष्यन्तक स्मृतिलाभ आ रामक स्मृतिपीड़ा एकै प्रकारक करुणा नहि। एहि अन्तरसँ संस्कृत नाटकमे राजाक नैतिक उत्तरदायित्वक दू रूप स्पष्ट होइत अछि।

जयन्त भट्टक आगमडम्बरम् धार्मिक सिद्धान्तक सार्वजनिक वादकेँ नाटकीय संघर्ष बनबैत अछि; मत्तविलास आ भगवदज्जुकम् सम्प्रदायगत अथवा देह-आत्माक प्रश्नकेँ उपहासक भीतर लऽ जाइत अछि। जयन्तक संवाद अधिक तर्काधिष्ठित अछि, प्रहसनसभक भाषा अधिक शारीरिक आ दृश्याधिष्ठित। तीनूकेँ ‘दार्शनिक नाटक’क एकहि अमूर्त नाममे समेटब समीक्षाक हानि करत।

कादम्बरीक दीर्घ वाक्य आ बहुस्तरीय कथन मृच्छकटिकम्क बहुचरित्र नगरनाट्यसँ भिन्न अछि। पहिलमे समयक प्रसार वर्णनाक सौन्दर्य बनबैत अछि; दोसरमे वस्तु, गाड़ी, आभूषण, मुकदमा आ शासनक घटना समयकेँ तीव्र करैत अछि। दुनू समाजक संरचना देखबैत अछि, मुदा एकर कथात्मक उपकरण भिन्न अछि।

मुद्राराक्षसम्क मुद्रिका आ मृच्छकटिकम्क आभूषण नाटकीय साक्ष्यक भौतिक वस्तु अछि। पहिलमे साक्ष्य जानि-बूझि गढ़ल जा सकैत अछि; दोसरमे वस्तुक चलन अपराधिक आरोपक आधार बनैत अछि। न्याय, राजसत्ता आ विश्वासक आलोचना एहि ठोस वस्तुसभक सहायतासँ शास्त्रीय अमूर्तनसँ आगाँ बढ़ैत अछि।

भल्लट, क्षेमेन्द्र आ नीलकण्ठक व्यंग्यमे सामाजिक व्यवहारक छल लघु बिम्ब अथवा सर्ग-विभाजनसँ व्यक्त अछि; पालाण्डुमण्डन आ हास्यार्णवमे वैह छल पात्रनाम आ मंचपर देहधारी सामाजिक व्यक्तिक माध्यमसँ उभरैत अछि। चतुर्भाणीक एक-अभिनेता व्यवस्था एहि दुनूक बीच एक तेसर शिल्प दैत अछि, जतय अनुपस्थित पात्रक रूप केवल स्वरसँ निर्मित होइत अछि। एहि तुलना सँ संयुक्त संस्करणक साहित्यिक बहुविधता स्पष्ट होइत अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

एहि तेरह पुस्तक-समूहक समेकित अध्ययन देखबैत अछि जे संस्कृत साहित्यकेँ एकरूप शास्त्रीय उच्चता अथवा केवल पुरान काव्य-रुचिक रूपमे सीमित करब असंगत अछि। एहिमे प्रेम आ विरहक सूक्ष्मता, धार्मिक वाद-विवादक सामाजिक राजनीति, देह आ आत्माक प्रहसनात्मक उलटाव, आर्थिक असमानता, न्याय-व्यवस्थाक संकट, राज्यनीतिक छल, शहरी जनजीवन, भोजनक सांस्कृतिक व्यंग्य आ दीर्घ स्मृतिक करुणा संग-संग अछि। एकर समग्रता बहुविध आलोचनात्मक पद्धतिक अपेक्षा करैत अछि।

मैथिली अनुवादक प्रमुख सम्भावना एहि बहुविधताकेँ नव पाठकसमाज धरि लऽ जेबामे अछि। उपलब्ध संस्करणकेँ अंग्रेजीक द्विभाषिक सहारेसँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा संस्कृत मूलक आलोचित संस्करण प्राप्त कऽ पाठभेद, छन्द, श्लेष आ तकनीकी पदक पाँति-दर-पाँति परीक्षण करब आगाँक विशेष कार्य रहत। ई सीमा वर्तमान समीक्षाक दोष नहि, स्रोत-प्रमाणक स्पष्ट सीमा थिक। आलोचनात्मक ईमानदारी एहि सीमाकेँ सुरक्षित राखि पाठक उपलब्धि आ वास्तविक तनावकेँ निरूपित करबामे अछि।

ग्रन्थाधार

ठाकुर, गजेन्द्र (संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद आ सम्पादन)। संस्कृत साहित्य-संग्रह : १३ पुस्तकक संयुक्त संस्करण। विदेह, २०२६। संयुक्त संस्करणमे समाविष्ट मूल कृतिसभ आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठ। ISBN 978-93-344-8592-9।

कालिदास। अभिज्ञानशाकुन्तलम्। संस्कृत मूल कृति; उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

जयन्त भट्ट। आगमडम्बरम्। संस्कृत मूल कृति; उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

बोधायन। भगवदज्जुकम्। संस्कृत मूल प्रहसन; उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

भल्लट, क्षेमेन्द्र आ नीलकण्ठ। भल्लट-शतक, कलाविलास आ कलियुग-विडम्बना। संयुक्त अनूदित पुस्तक-समूह।

शूद्रक, ईश्वरदत्त, वररुचि आ श्यामिलक। चतुर्भाणी। संयुक्त अनूदित पुस्तक-समूह।

रचनाकार अनिश्चित। दामक प्रहसनम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

जगदीश्वर भट्टाचार्य। हास्यार्णवप्रहसनम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

बाणभट्ट आ भूषणभट्ट। कादम्बरी। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

शूद्रक। मृच्छकटिकम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

महेंद्रविक्रमवर्मन् प्रथम। मत्तविलास प्रहसनम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

विशाखदत्त। मुद्राराक्षसम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

हरिजीवन मिश्र। पालाण्डुमण्डन प्रहसनम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

भवभूति। उत्तररामचरितम्। उपर्युक्त संयुक्त संस्करणमे मैथिली अनुवाद।

संस्कृतक अनेकरूप साहित्य-संसार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ४३

कालिदास आ भवभूतिक करुणा, जयन्त भट्टक धर्म-विवाद,
भल्लट आ क्षेमेन्द्रक व्यंग्य, चतुर्भाणीक एकल अभिनय,
शूद्रकक सामाजिक नाटक आ विशाखदत्तक राजनैतिक चातुर्य—
तेरह पुस्तक-समूहक अठारह कृतिक आलोचनात्मक पुनर्पाठ।
मैथिली अनुवाद आ उपलब्ध अंग्रेजी पाठक तुलनात्मक दृष्टि।

मूल ग्रन्थकारक श्रेय — पाठ-परीक्षण — नाट्यशिल्प

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह मूल

विदेह डिजिटल संग्रह

VIDEHA | ISSN 2229-547X